

पद ७०

(राग: वसंत - ताल: त्रिताल)

हा गे आला भगवंत वसंत ऋतु। त्रिकांड पूर्ण कर्मफलदाता।
वनश्री या सुप्रसन्न बोलती। नाथ सखे त्वं विजय जयतु ते॥
(अंतरा) धर्म अर्थ आणि काम त्रिविध पुरुषार्थप्रद ईशसुख निधान
ज्ञानरूप मार्तांड अचल घन निजानंदबीज मंगलप्रभु॥१॥